डॉ. मधुकर श्री. हसमनीस
एम्. ए. (हिन्दी), एम्. ए. (मराठी) , पीएच्.डी.
रीडर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
विश्वासराव नाईक महाविद्यालय,
शिराला, जि. सांगली.
तथा
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक ।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, **प्रा. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर** ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध **'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आंचलिकता का मूल्यांकन'** मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रा. प्रकाश शं. चिकुर्डेकर के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ ।

डॉ. मधुकर श्री. हसमनीस
शोध-निर्देशक

इस्लामपुर,
दिनांक - 13 / 6/1994.

प्रख्यापन

" रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आंचलिकता का मूल्यांकन । "

यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल.(हिन्दी) के लघु-शोध- प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर,

शोध-छात्र

चिकुर्डे (जि. सांगली)

दिनांक - १३/ ६/ १९९४.

Reader and Head
Department of Hindi
Shivaji University,
Kolhapur - 416004

पानी के प्राचीर

रामदरश मिश्र

जल टूटता हुआ

रामदरश मिश्र

रामदरश मिश्र

सूखता हुआ तालाब

रामदरश मिश्र

के आंचलिक उपन्यास

विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	1 — 5
प्रथम अध्याय	
आंचलिक उपन्यास का शिल्प-विधान	6 —23
प्रस्तावना :	
१.१.अ) 'अंचल' शब्द, अर्थ और पर्याय	
१.१.ब) आंचलिक	
१.१.क) आंचलिकता	
१.२. 'आंचलिक उपन्यास' की परिभाषा	
१.३. परिभाषा सम्बन्धी निष्कर्ष तथा आंचलिक उपन्यासों की विशेषताएं	
१.४. आंचलिकता ग्रामीण या शहरी ?	
१.५. आंचलिक उपन्यास के तत्त्व	
निष्कर्ष	
द्वितीय अध्याय	
हिन्दी आंचलिक उपन्यास : उद्भव और विकास	24—41
प्रस्तावना :	
२.१. आद्य हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में आंचलिकता की झलक	
२.२. प्रारंभिक आंचलिक उपन्यास	
२.३. प्रथम आंचलिक उपन्यास	
२.४. आंचलिक उपन्यासों का विकास युग	
२.५. आंचलिक उपन्यास विकास यात्रा में रामदरश मिश्र का आविर्भाव	
निष्कर्ष	

तृतीय अध्याय

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आंचलिकता 42—104

प्रस्तावना ।३.१. कथानक का आंचलिक आधार

<u>३.१.अ) पानी के प्राचीर (१९६१)</u>

३.१.अ) १. उपन्यास का प्रारंभ

३.१.अ) २. उपन्यास का नायक

३.१.अ) ३. ग्रामांचल का पिछड़ापन

३.१.अ) ४. भौगोलिक स्थिति

३.१.अ) ५. मानवीय संकटों के घेरे में अंचलवासी

३.१.अ) ६. अंचल में संघर्ष

निष्कर्ष

<u>३.१.ब) जल टूटता हुआ (१९६९)</u>

३.१.ब) १. आंचलिक पृष्ठभूमि

३.१.ब) २. उपन्यास का प्रारंभ

३.१.ब) ३. आंचलिकता में पला नायक

३.१.ब) ४. अंचल में जमींदारी प्रथा

३.१.ब) ५. जाति-प्रथा

३.१.ब) ६. बाढ़ की समस्या

३.१.ब) ७. ग्रामांचल की राजनीति

३.१.ब) ८. भौगोलिक स्थिति

३.१.ब) ९. अंचल में संघर्ष

३.१.ब) १०. अंचल में वेदना से भरा नारी--जीवन

३.१.ब) ११. टूटती जिन्दगी

३.१.ब) १२. आनंद और वेदना से भरा उपन्यास का अन्त

निष्कर्ष

३.१.क) सूखता हुआ तालाब (१९७२)

३.१.क) १. उपन्यास का प्रारंभ

३.१.क) २. उपन्यास का नायक

३.१.क) ३. अंचल की स्थिति

३.१.क) ४. अंचल में संघर्ष

३.१.क) ५. भौगोलिकता एवं प्रतिकता

३.१.क) ६. ग्रामांचल की राजनीति

३.१.क) ७. आशा-निराशा से भरा उपन्यास का अंत

निष्कर्ष

३.१.(अबक) उपसंहार

३.२. अंचल में लोक-संस्कृति का चित्रण -

(पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब)

३.२.१. त्यौहार

३.२.२. ऋतु गीत

३.२.३. प्रेम के संयोग-वियोग गीत

३.२.४. किसान गीत

३.२.५. बिदाई गीत

३.२.६. शोकगीत

३.२.७. फिल्मी गीत पर आधारित भजन

३.२.८. उपसंहार

३.३. अंचल में अंधविश्वास एवं धार्मिक जीवन

३.३.१. चुड़ैल का प्रभाव

३.३.२. सभी जाति-धर्मों में भूत पूजते हैं

३.३.३. देवी-देवताओं के प्रति विश्वास

३.३.४. सुनसान जगह के प्रति डर

३.३.५. ढोंगी ज्योतिषी

३.३.६. स्त्री-पुरूषों के शरीर में देवता का संचार

३.३.७. मंत्र-तंत्रों पर भरोसा

३.३.८. प्रकृति के प्रति भय

३.३.९. विधवा का मुँह देखना अशुभ मानते हैं

३.३.१०. सगुन-असगुन पर विश्वास

३.३.११. उपसंहार

३.४. सामाजिक जीवन

३.४.१. नारी जीवन

३.४.२. नारी के अलग-अलग रूप

३.४.२.१. लड़की के प्रति घृणा-दृष्टि

३.४.२.२. निःसंतान स्त्री के प्रति घृणा

३.४.२.३. असहाय नारी

३.४.२.४. वैवाहिक नारी जीवन

३.४.२.५. विधवा की स्थिति

३.४.२.६. नारी शिक्षा

३.४.३. सामाजिक रीति और जाति भेद

३.४.४. विवाह सम्बन्धी रस्मे

३.४.४. अ) सजातीय विवाह

३.४.४. ब) विजातीय(प्रेम सम्बन्ध) विवाह

३.४.५. जातिगत ऊँच-नीच के भेद-भाव

३.४.६. सामाजिक जीवन में परिवर्तन नहीं

३.४.७. आपसी लड़ाई-झगड़े

३.४.८. बदले की भावना

३.४.९. उपसंहार

३.५. अंचल का राजनीतिक जीवन

३.५.१. पंचायत चुनाव

३.५.२. राजनीतिक षड़यंत्र

३.५.३. पुलिस कर्मचारियों का रोब और स्थानिक राजनीति

३.५.४. चकबन्दी

३.५.५. राजनीतिक दलों का प्रभाव

३.५.५. अ) आजादी के पूर्व

३.५.५. ब) आजादी के बाद

३.५.६. दोंगी नेता

३.५.७. उपसंहार

३.६. अंचल में चित्रित अर्थ-व्यवस्था

३.६.१. आर्थिक स्थिति एवं लगान

३.६.२. आर्थिक दृष्टि से कमजोर किसान

३.६.३. जमींदारों का रोब

३.६.४. जमींदार काम का दाम नहीं देते

३.६.५. जमींदारों द्वारा श्रमिकों के जीवन में बाधाऐं

३.६.६. आर्थिक विषमता

३.६.७. निर्धन जातियाँ और विविध समस्या

३.६.७.(१) पेट की समस्या

३.६.७.(२) भोजन की समस्या

३.६.७.(३) बाढ़ की समस्या

३.६.७.(४) वस्त्र की समस्या

३.६.७.(५) ऋण की समस्या

३.६.७.(६) बेरोजगार की समस्या

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

"रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित आंचलिक प्रदेश में बदलाव।" 105—121

प्रस्तावना

४.१. लोकसंस्कृति और अंचल की प्रगति

४.१. अ) त्यौहारों के प्रति बदलती दृष्टि

४.१. ब) एकता के प्रति नवचेतना

४.२. अंधश्रद्धाओं तथा धार्मिक रीति-रिवाजों के प्रति बदलाव

४.२.१. भूत-प्रेत को मानने से इन्कार

४.२.२. हिस्टीरिया का दौरा-एक मन की कमजोरी

४.३. शिक्षा का महत्व

४.३.१. लड़कियों की शिक्षा

४.३.२. शिक्षा के कारण गांवो में रचनात्मक विकास

४.४. विवाह के प्रति बदलती दृष्टि

४.४.१. बालविवाह का विरोध

४.४.२. विधवा विवाह के प्रति उदारभाव

४.४.३. आन्तरजातीय विवाह

४.५. सामाजिक जागृति

४.५.१. औरतों को वोट का अधिकार- एक जन-जागरण

४.५.२. नारी जागरण

४.५.३. नारी, अन्याय के विरूध्द लड़ने के लिए तैयार

४.६. आर्थिक शोषण के प्रति सजगता

४.६.१. आर्थिक शोषण करके दिये जानेवाले पुरस्कार का त्याग

४.७. नव राजनीतिक चेतना एवं राष्ट्र - प्रेम की भावना

४.७.१. नारेबाजी एवं जाति वर्ग के प्रतिनिधी

४.७.१. अ) आजादी के पूर्व

४.७.१. ब) आजादी का आनंदोत्सव

४.७.२. स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक जीवन में नव चेतना

४.७.३. राजनीति में चाणक्य-कृष्ण और गांधी नीति का प्रयोग

निष्कर्ष

पंचम अध्याय 122 — 127

* **उपसंहार**

* ***परिशिष्ट*** 128 — 140

रामदरश मिश्र का जीवन पट

रामदरश मिश्र की साहित्य-संपदा

आधार-ग्रन्थ

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची

हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी शब्द कोश

हिन्दी-अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाएँ

* रामदरश मिश्र जी की लिखावट के रुप में पत्र